बाल साहित्य का ताजा परिदृश्य

❑ डॉ. सुनीता

अक्सर बाल साहित्य और बाल लेखकों को बड़ी उपेक्षा और कभी-कभी तो हिकारत की दृष्टि से देखने का हमारा समाज आदि हो गया है। खासकर हिंदी क्षेत्र के बारे में तो यह बात बहुत अधिक सच है। यह नहीं कि बाल साहित्य लिखने वाले लेखकों का समाज में ही सम्मानपूर्ण स्थान नहीं है, बल्कि हिंदी में बड़ों के लेखक भी अक्सर बाल साहित्य के लेखकों का मखौल उड़ाते नजर आ सकते हैं।

मैं कभी-कभी हैरान होकर सोचती हूं कि क्या यह किसी स्वस्थ समाज का लक्षण है ? एक स्वस्थ समाज के केन्द्र में हमेशा बच्चा ही होता है, क्योंकि वह सबसे ताजा संभावनाओं का वाहक है तो फिर बच्चे के मन को इंगित करने वाले साहित्य या उसके मन-प्राणों को तृप्त करने वाले साहित्य की भला उपेक्षा क्यों ? कहीं ऐसा तो नहीं कि बच्चों के लिए सिरजना कठिन है, इसलिए वे बाल लेखकों का उपहास करते हैं। बच्चों के लिए कुछ भी रचने के लिए पहले बच्चों जैसा सरल होना पड़ता है। फूलों में फूल बनकर महकना पड़ता है, तितलियों में तितली बनकर उड़ानें भरनी होती हैं, पक्षियों की चहचहाट में घुल जाना होता है। जो अपने ईर्ष्या-दम्भ में अकड़े हुए हैं, उनके लिए भला यह आसान कहां है ? तो फिर वे बच्चों के लिए लिखने वाले बाल साहित्यकारों पर हंसकर ही अपनी कुंठा निकाल लेते हैं। वरना तो इस लेख को लिखने की तैयारी में पिछले दिनों बाल साहित्य के नए और वरिष्ठ लेखकों की जिन पुस्तकों से मैं गुजरी हूं, उन्हें देखकर कतई नहीं लगता कि बाल साहित्य का परिदृश्य निराशाजनक है। बल्कि कई बार तो हैरान होना पड़ता है कि बच्चों के लिए कविता, कहानियां या ज्ञान-विज्ञान की इतनी सुंदर पुस्तकें हिंदी में लिखी जा रही हैं तो फिर बाल साहित्य की दरिद्रता को लेकर रोने वाले कौन हैं और क्यों हैं ?

सबसे पहले बच्चों के लिए लिखे गए कथा-साहित्य की चर्चा की जाए। कहानी की इन पुस्तकों में हिंदी के सम्मानित कवि साहित्यकार निरंकार देव सेवक की छोटी-छोटी नौ कहानियों की आकर्षक पुस्तक 'फूल और तितलियां' थी जिसकी ओर सबसे पहले मेरा ध्यान गया । सेवक जी हिंदी के बड़े कवि ही नहीं थे, वे बच्चों के मन तक पहुंच जाते थे। 'फूल और तितलियां' पुस्तक पढ़कर यह बात अच्छी तरह समझ में आ जाती है। इन कहानियों की एक खास बात यह है कि इनमें एक भी सुनी-सुनाई या फार्मूलाबद्ध कहानी नहीं है। हर कहानी निरंकार देव सेवक की एक नई सृष्टि है। हर कहानी के पीछे एक नन्हा विचार छिपा हुआ है, जो आगे बच्चों के पूरे जीवन में काम आ सकता है, और भ्रम और अंधेरे में जीने की एक राह दिखा सकता है। इस नन्हे विचार को मानो निरंकार देव सेवक खेल-खेल में एक नन्हीं कहानी में बदल देते हैं।

पुस्तक की पहली ही कहानी फूल और तितलियां में दो तितलियां एक खिले हुए गुलाब को देखकर शर्त लगाती हैं, जो उसके पास पहले पहुंचेगी वह सारा पराग ले लेगी। हरी तितली पहले पहुंचती है, लाल तितली बाद में। पर हरी तितली उसे गुलाब के पास बैठे हुए देखना भी बर्दाश्त नहीं कर पाती। उन दोनों में

लड़ाई होती है, एक तीसरी तितली कहती है, ''तुम दोनों लड़ क्यों रही हो ? बगिया में तो और बहुत से गुलाब के फूल हैं। पराग उन सब फूलों में है।'' बात को किस खूबसूरत अंदाज में कहा गया है । यह कला निरंकार देव सेवक से सीखी जा सकती है। इसी तरह एक छोटी-सी कहानी चोर को लेकर है। नसीर अपने घर से सामान चुराकर ले जाने वाले चोर का पीछा करता है, तो चोर उसे धमकाता है - ''तुम मेरा पीछा क्यों कर रहे हो ? जाओ अपने घर।'' इस पर नसीर का जवाब है -''जाऊं कहां ? जहां मेरा सामान, वहीं मेरा घर। मैं वहीं चलकर रहूंगा, जहां तुम यह सामान रखोगे।'' कहने का मतलब यह ढंग मुग्ध कर देने वाला है। सचमुच सेवक जी की इन नन्ही-नन्ही कहानियों को पढ़कर समझ में आता है कि बाल साहित्य के इस पुरोधा के उस्तादाना फन का कोई जवाब नहीं ।

'नन्हे घरौंदे' प्रसिद्ध कथाकार हिमांशु जोशी की बच्चों के लिए लिखी गई पांच कहानियों की पुस्तक है। ऐसी कहानियां जो बच्चों में संवेदनशीलता बढ़ाने में मददगार होंगी। पहली कहानी नन्हे घरौंदे' तिब्बत में रहने वाले एक दादाजी और उनके दो पोतों की, मन को छू लेने वाली कहानी है। दोनों बच्चे छोटे हैं। दादा जी ही इनके लिए रोटी बनाते हैं, कपड़े धोते हैं और बाकी सारे काम भी करते हैं। एक दिन छोटे पोते ने पूछा सबके मां-बाप होते हैं। हमारे मां-बाप कहां हैं ?'' दादाजी उन्हें धीरे-धीरे बताते हैं कि कैसे चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया और कितने ही लामाओं को मार दिया। आम जनता को अपने प्राण बचाने के लिए घर छोड़कर इधर उधर भागना पड़ा। अब दादाजी भला बच्चों को यह कैसे बताएं कि उनके मां-बाप भी इसी युद्ध में मार डाले गए थे। दादाजी उन नन्हें बच्चों की नन्हीं उम्मीदें नहीं तोड़ना चाहते। उन्हें आस बंधाते हुए कहते हैं - ''हां, जिस दिन आसमान साफ होगा, बर्फ पिघलेगी, पीली-पीली धूप चमकेगी; उस दिन वे अवश्य आएंगे।''

इसी तरह 'रिपोछे' भी इस पुस्तक की अच्छी कहानी है। लद्दाख के एक लोकप्रिय राजा की कहानी। कहानी में लद्दाखियों के चीनियों को मार भगाने और अपनी धरती को छुड़ा लेने का बड़ा वीरतापूर्ण ढंग से वर्णन है, जो बच्चों में देश प्रेम की भावना जगाता है। इसी तरह 'नागबूरी देवता की देन' और 'टूटा किनारा' भी हिमांशु जोशी की बड़ी भावपूर्ण कहानियां हैं। 'देवता की देन' में एक अकेली बुढ़िया और बंदरिया का परस्पर प्रेम आंखों को आर्द्र कर देता है। हिमांशु जोशी की ये कहानियां दूसरों के दुखों को महसूस करने की संवेदनशीलता बच्चों में जगाएंगी, यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है।

'फूलों की घाटी' में प्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलाल नागर की बच्चों के लिए लिखी गई चार मजेदार कहानियां हैं। इन कहानियों का ऐतिहासिक महत्त्व इसलिए भी है कि ये नागर जी की लगभग अंतिम रचनाएं हैं। नागर जी ने ये कहानियां अपने नाती-पोतों या पड़ौसियों के छोटे -छोटे बच्चों के साथ खेलते हुए, बच्चों द्वारा नई कहानी सुनाने की जिद करने पर लिखीं । इनमें से कुछ कहानियां तो लोक कथाओं जैसी ही हैं। हां, कहने के ढंग में नागर जी की चुस्त बयानी देखने लायक है। उदाहरण के लिए पुस्तक की एक कहानी है 'बुढ़िया की चालाकी'। यह न जाने कब से चली आ रही है। पुरानी लोक कथा है। पर मजा यह है कि नागर जी अपने खास अंदाज में कहानी को सुनाते हैं तो उसकी रोचकता कहीं और बढ़ जाती है और लगता है यह कहानी हमें अपने बचपन में ले जाती है। इसी तरह 'घमंड की सजा' एक चिड़िया और चिड़े की बड़ी मजेदार कहानी है। होता यह है कि आलसी चिड़िया चिड़े के बाहर जाने के बाद अपने लिए विविधि प्रकार के व्यंजन बनाकर खाती है और चिड़े को कुछ नहीं देती। पर जब चिड़े को इस बात की भनक लगती है, तो वह एक दिन छिपकर देखता है । जब भोजन बिल्कुल तैयार हो जाता है, तो ऐन मौके पर पधारकर, उसी तरह सारा भोजन चट कर जाता है जैसे अकेले चिड़िया खाती है। बस, चिड़िया उसी दिन निश्चय कर लेती है कि अब वह रोजाना चिड़े और अपने दोनों के लिए भोजन पकाएगी। 'नटखट खरगोश' और 'फूलों की घाटी' भी रोचक कहानियां हैं। नागर जी की ये कहानियां बच्चों को खूब गुदगुदाएंगी और खेल-खेल में समझदारी का पाठ भी पढाएंगी।

'रूपा और एक परी' डॉ. वर्षादास द्वारा लिखी गई एक दिलचस्प कहानी है, जिसे सुंदर और आकर्षक चित्रों से सजाया गया है। पूरी पुस्तक में एक ही लंबी कहानी है। कहानी में दो बहनें रूपा और रीना हैं, जिनमें एक परी भी आकर शामिल हो जाती है। बड़ी बहन रूपा परी को अपनी सहेली बना लेती है। परी की मदद से वह एक राजकुमारी को, जो दुश्मन की कैद में है, छुटकारा दिलाती है। कहानी बडे मजेदार ढंग से बुनी गई है। और इसमें कहीं भी झोल नहीं है। पुस्तक में चित्र भी बहुत सुंदर और भावों के अनुकूल हैं। बच्चे एक ही बैठक में इस कहानी को पूरा पढ़ सकते हैं।

'हिलने लगी धरती' में श्रीनिवास तत्स की इक्कीस पारंपरिक ढंग की कहानियां हैं। ये सभी कहानियां बाल पाठकों को सच्चाई ईमानदारी, मेहनत, न्यायप्रियता और सहानुभूति जैसे संस्कारों से जोड़ती हैं। अच्छी बात यह है कि श्रीनिवास तत्स अपनी कहानियों में उपदेशात्मकता को हावी नहीं होने देते हैं और कहानी में से खुद--ब-खुद एक अच्छा विचार निकल कर आता है, भले ही राजा-रानियों और जमीदारों की कहानियों के जरिए उन्होंने ये अच्छे संस्कार देने की कोशिश की है, पर फिर भी कहानियां उबाऊ कतई नहीं लगतीं। उनमें सरसता, सहजता, और पठनीयता बराबर बनी रहती है। संग्रह की पहली कहानी 'मालपूए' बड़ी मजेदार है जिसमें

अच्छा भला खाने-पीने वाली, लेकिन बीमार होने का दिखावा करने वाली पत्नी का बड़ा सही इलाज ढूंढ़ा है कहानीकार ने। एक के बाद कहानी में सूत्र रूप में बड़ी गूढ़ बातें बच्चे को समझाइ गई है। 'एक से पांच' कहानी अन्यायी को सबक सिखाने वाली सूझ देती है, तो 'रसोई महक उठी' असल में हमारे पवित्र मनों की महक को ही दूर तक फैलाती है ! संग्रह की बाकी कहानियां भी बच्चे चाव से पढ़ेंगे।

हिंदी में हास्य की कमी थी अक्सर शिकायत की जाती है। बच्चों के लिए लिखी जा रही कहानियों में अच्छी और ताजगी से भरी हास्य कथाएं कम ही मिलती हैं। लेकिन प्रसिद्ध हास्य व्यंग्यकार के. पी. सक्सेना की किताब 'सुनो भई गप्प' पढ़कर यह हो ही नहीं सकता कि आप अपना ओढ़ा हुआ गंभीरता का लबादा एक ओर न झटक दें। ऐसी-ऐसी कमाल की गप्पें हैं इस किताब में कि बच्चे एक के बाद एक गप्प का मजा लेते हुए, इसे पूरा पढ़े बिना छोड़ेंगे नहीं। उदाहरण के लिए 'हकीम टकले का दवाखाना' नामक गप्प में वे बताते हैं कि फौज में मोर्चे पर लड़ते हए गोली लगने से फूफाजी की देह आधी कट गई तो टकले हकीम ने फौरन पास ही चरती एक बकरी का आधा हिस्सा काटा और फूफाजी के नीचे जोड़ दिया। उनकी पत्नी, जब तक वे जीवित रहे, सुबह-शाम रोज आधा-आधा सेर बकरी का दूध निकालती रहीं। पुस्तक बड़ी ही मजेदार है और इन हास्य कहानियों के साथ जो चित्र दिए गए हैं, वे भी कमाल के हैं।

'पारा टोली का पारस' में लालित्य ललित की एक लंबी कहानी है जो पढ़ने-लिखने की प्रेरणा देती है। एक मजदूर का बेटा पारस पढ़-लिखकर गांव को पंडित जी के शोषण से मुक्ति दिलाता है। गांव में जब कोई पढ़ा-लिखा न था, पंडितजी किसी से भी चिट्ठी पढ़ने के पचास पैसे और लिखने का एक रुपया वसूल कर लेते थे। बेचारे भोले-भाले अनपढ़ मजदूर चिट्ठी लिखवाने और पढ़वाने के लिए उन्हीं पर आश्रित थे। पारस पढ़-लिखकर पहले अपने मां-बाप को शिक्षित करता है और फिर पूरी बस्ती को। धीरे-धीरे पूरी बस्ती की काया पलट हो जाती है। बच्चों को पढ़ने-लिखने की प्रेरणा देने वाली यह एक ढंग की पुस्तक है।

हिंदी में बच्चों के लिए अच्छे और रसमय उपन्यास ज्यादा देखने को नहीं मिलते। पर इसे संयोग ही कहा जाए कि इधर बच्चों के तीन उपन्यास मुझे लगभग साथ-साथ पढ़ने को मिले। ये बाल उन्यास हैं - चित्रा मुद्‌गल का 'माधवी कन्नगी', हिमांशु जोशी का 'तीन तारे' तथा विनायक का 'जंगल और नदिया'। इनमें 'माधवी कन्नगी' का परिवेश थोड़ा पुराना है, पर चित्रा मुद्‌गल ने कहानी का सुर अंत तक टूटने नहीं दिया। कन्नगी का व्यापारी घराने का धनाढ़य पति कोवलन रास्ते से भटक जाता है और नर्तकी माधवी की ओर आकर्षित होकर अपना सारा धन उस पर लुटा देता है लेकिन यह कन्नगी का धैर्य और तप ही है कि जिसके प्रभाव से एक दिन पति अपराधी की तरह, पत्नी के आगे आ खड़ा होता है और अपनी भूल के लिए क्षमा मांगता है। यहां तक कि कन्नगी को अपमानित करने में सुख मानने वाली माधवी भी कन्नगी के आगे झुक जाती है। झूठे आरोप में राजा द्वारा कोवलन को मृत्युदंड दिए जाने पर, कन्नगी जिस तरह चोट खाई नागिन सी राजा के महल में जाकर उसे फटकारती है, वह दृश्य तो कभी भूला ही नहीं जा सकता। अंत में शोकाकुल कन्नगी प्राण त्याग देती है। चित्रा मुद्‌गल ने इस बाल उपन्यास की कथा को इतने बढ़िया ढंग से बुना है कि बच्चे जब इसे पढ़ना शुरू करेंगे, तो पूरा किए बिना न छोड़ेंगे। सती के रूप में कन्नगी की प्रतिष्ठा करना जरूर अखरता है।

'तीन तारे' प्रसिद्ध कथाकार हिमांशु जोशी द्वारा बच्चों के लिए लिखा गया एक आकर्षक उपन्यास है। इसमें एक साहसी बच्चा टिंकू है और दो उसके प्यारे-प्यारे दोस्त नब्बू और गब्बू हैं। ये नब्बू और गब्बू गधे के दो छोटे-छोट, सुंदर बच्चे हैं, जिनकी टिंकू के साथ दोस्ती बड़ी गहरी है। हिमांशु जोशी ने इस बाल उपन्यास की कथा इतने सुंदर ढंग से गढ़ी है कि वह शुरू से अंत तक पाठक पर अपनी पकड़ बनाए रखती है। सबसे अच्छी बात यह है कि इस उपन्यास को पढ़कर बच्चों के मन में यह भावना उत्पन्न होगी कि मनुष्य या दूसरे प्राणी, उनमें कोई फर्क नहीं है। सभी एक जैसा सुख-दुख महसूस करते हैं और प्रेम की भाषा को समझते हैं। इसलिए तो उस बाल उपन्यास का नायक टिंकू न सिर्फ अपने दोस्तों नब्बू और गब्बू को सम्मान दिलाता है, बल्कि एक और बढ़िया काम कर दिखाता है। साधु के वेश में बच्चों को चुराकर उन्हें बेच देने वाले गिरोह का भंडाफोड़ करके, टिंकू उनके चंगुल में फंसे मासूम बच्चों को छुड़ाता है और उन्हें अपने घर ले आता है। हालांकि इस काम में उसे बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बीच-बीच में नब्बू गब्बू भी उसकी मदद करते हैं। वह अंत तक घबराता नहीं है। और जो सोचा है, उसे करके ही दम लेता है। इसी तरह वध के लिए चोरी से इकट्ठे किए पशुओं को भी वह कसाइयों के बाड़े से छुड़ाने में जिस हिम्मत से काम लेता है, वह प्रशंसनीय है। उपन्यास में आकस्मिक रूप से भी कुछ चीजें घटती हैं, जो उपन्यास को और मजेदार बना देती हैं। उदाहरण के लिए, जब टिंकू पशुओं के बाड़े में उन्हें छुड़ाने के लिए पहुंचता है तो सांड के सिर पर जोर से हथोडी के गिरने पर बड़ा ही अनोखा दृश्य उत्पन्न होता है। सिर पर हथोड़ी के गिरते ही सांड का बिफरना और फिर देखते ही देखते सारे पशुओं और चौकीदारों में भगदड़ मच जाती है। वाह ! क्या कमाल की स्थिति गढ़ी है हिमांशु जोशी ने। ऐसी हालत

में चौकीदार अपनी जान बचाएंगे या कि भागते हुए पशुओं को रोकेंगे ! सारे जीवों को एक साथ छुड़ाने का यह नायाब तरीका निकाला है लेखक ने। उन्यास बड़े रोचक अंदाज में लिखा गया है। भाषा सहज और सरल है, लिहाजा बच्चे इसका खूब आनंद लेंगे।

विनायक का उपन्यास 'नदिया और जंगल' भी कम दिलचस्प नहीं है यह उपन्यास बड़े बेजोड़ ढंग से यह कहता जान पड़ता है कि जंगल शेर, हिरन और दूसरे वन्य जानवरों का घर है, लेकिन मनुष्य ने जंगल काटकर अंधा-धुंध शिकार करके, सुख से रहने वाले इन वन्य प्राणियों का जीवन नरक कर दिया है। अगर ये वन्य प्राणी स्वयं अपना उपन्यास लिखें, तो इस उपन्यास का सबसे अधम खलनायक मनुष्य ही होगा, जो बिना बात उनके सुख-चैन को छीन लेता है और उनका जीना हराम कर डालता है। विनायक ने अपने बाल उपन्यास 'जंगल और नदिया' में ये बातें सीधे-सीधे नहीं कहीं, पर उपन्यास की कथा में इतने खूबसूरत ढंग से उन्हें पिरो दिया है कि पढ़ते-पढ़ते आंखें सजल हो उठती हैं। उपन्यास के शुरू में जंगल में शेर-शेरनी और उनके दो बच्चों की छोटी-सी गृहस्थी का इतना प्यारा और खूबसूरत चित्रण है कि मन मुग्ध हो उठता है। फिर शेर और घड़ियाल की तनातनी का एक छोटा-सा नाटकीय दृश्य भी है। पर जंगल के दोनों ही भोले पशु इस बात को जल्दी ही भूल जाते हैं। और बाद में घड़ी (घड़ियाल) चाचा शेर-शेरनी के ऐसे प्यारे दोस्त बने हैं कि दोस्ती की ऐसी मिसाल कम ही देखने को मिलती है। उपन्यास का अंत बड़ा मार्मिक है। शेर-शेरनी के नन्हे शावक जंगल को एक शिकारी दल ने कैद कर लिया। तब घड़ी (घडियाल) चाचा जंगल को उनके कब्जे से छुड़ाने की योजना बनाते हैं और अपने प्राणों को संकट में डालकर शिकारियों की छावनी में पहुंच जाते हैं। उधर अपने बच्चों को छुड़ाने के लिए शेरनी शिकारियों के बीच छलांग लगाकर पहुंच जाती है, हडकंप मचता है। मगर शेरनी गोली लगने से मर जाती है। हां, अपने बच्चों को वह शिकारियों के चंगुल से जरूर छुड़ा लेती है। उपन्यास के अंत में शेरनी के लिए शेर का विलाप सुन, मानो पूरा जंगल रो पड़ता है। विनायक का यह उपन्यास सचमुच लाजवाब है। अरसे बाद एक ऐसा अनोखा उपन्यास बच्चों के लिए लिखा गया है, जिसका शब्द-शब्द बच्चे पढ़ेंगे और कभी भूल न पाएंगे।



बच्चों के लिए लिखी गई सरस और मजेदार बाल कविताओं के संग्रह भी इधर छपे हैं। इनमें सबसे अच्छा संग्रह है, प्रतिष्ठित साहित्यकार कन्हैयालाल मत्त की चुटीली और दमदार कविताओं का संग्रह 'आटे-बाटे सैर-सपाटे'।

मत्त जी की इन कविताओं का एक खास गुण है गेयता या लय की जादूगरी। ज्यादातर कविताएं ऐसा लगता है, जैसे बच्चों के साथ खेलते हुई लिखी गई हों, जिनमें बच्चों का खेलना-कूदना, नाचना-लड़ना, खाना-पीना, छीना-झपटी; यह सब नजर आता है। और इन कविताओं की लय नाचते-गाते, खेलते-कूदते, कभी झगड़ते तो कभी खिल-खिलाते बच्चों की ताल गति से एकदम मेल खाती हुई लगती है। संग्रह की एक बहुत अच्छी कविता है 'चल भाई काके' जिसकी शुरूआत ही बड़ी मजेदार है - ''उलटे-सीधे बना न खाके/खेल जमाएं चल भई काके।'' मानो एक सुस्त से बैठे बच्चे को उसका दोस्त बाहर चल कर खेलने के

लिए उकसा रहा हो। इन कविताओं में गेयता इतनी जबरदस्त है कि बच्चे ही नहीं, बड़े भी इन्हें पढ़ते हुए गाए-गुनगुनाए बगैर नहीं रह पाएंगे।

संग्रह की कुछ और बाल कविताएं हैं - 'रूठ गई गुड्डे से गुडिया', 'तोतली बुढ़िया', 'सैर सपाटे के दिन आए', 'सूरज से यों चंदा बोला', 'दीदी ने ये पिल्ले पाले', 'पर्वत्त और गिलहरी', 'चूहे जी ने उत्तर भेजा', 'बुढ़िया नानी', 'मिस्टड़ मोटूड़ाम' 'डंडा डोली पालकी' तथा 'बोल री मछली कितना पानी'। ये कविताएं बच्चों को खेल-खेल में अपने साथ बहा ले जाती हैं और उन्हें कल्पना की लहरों पर उड़ना सिखाती हैं। अगर कहीं कोई सीख भी दी गई है, तो इतने बढ़िया ढंग से कि मन मुग्ध हो उठता है। जैसे चंदा जब सूरज से बड़े ठसके से यह कहता है कि तुम तो धरती को गरमी से झुलसाते हो, मैं कितनी ठंडक देता हूं, तो सूरज बड़े शांत लहजे में लेकिन अपने पूरे बड़प्पन के साथ उसे समझाता है - 'भोले चुनमुन तुझको ज्ञान नहीं है/ तूने जो यह बात कही है, उसमें जान नहीं है, तू जो कुछ दुनिया को देता, मुझसे ही पाता है/ मेरी ही किरणों के बल से तू यों मुस्काता है'। इसी तरह 'पर्वत और गिलहरी' कविता में गिलहरी शेखीखोर पर्वत का घमंड़ अपने एक ही वाक्य से चूर-चूर कर देती है - ''हिम्मत है तो कर मुकाबला, ये बातें बेकार छोड़कर/हार मान लूंगी मैं तुझसे, दिखा जरा अखरोट तोड़कर।'' इसी तरह 'दीदी ने ये पिल्ले पाले' कविता पढ़ते समय सचमुच आंखों के आगे उछलते-कूदते भोले-भाले नन्हें -नन्हें पिल्ले आ जाते हैं, जिन्हें पुचकारने का मन हो उठता है। संग्रह में ऐसी ढेरों कविताएं हैं जिन्हें बच्चे झूम-झूम कर पढ़ेंगे और हमेशा याद रखेंगे। यों भी मत्त जी की कविताओं की यह खासियत तो है कि एक बार पढ़ लेने के बाद वे होठों से उतरती ही नहीं हैं। संग्रह बहुत खूबसूरत ढंग से छपा है। हिंदी में बाल कविताओं के इतने अच्छे संग्रह बहुत कम देखने को मिलते हैं।

'सात भाई चम्पा' में हिंदी के प्रतिष्ठित कथा शिल्पी अमृतलाल नागर की दो लंबी बाल कविताएं हैं। नागर जी ने बच्चों के लिए कहानियां तो लिखी ही हैं, बीच-बीच में ऐसी कविताएं भी लिखी हैं जिसमें उनके कवि और कथाकार का अनोखा मेल नजर आता है। 'सात भाई चंपा' की दोनों बाल कविताएं लम्बी कथात्मक कविताएं ही हैं। इनमें 'सात भाई चंपा' गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रसिद्ध कविता 'सात भाई चंपा' का भावनात्मक अनुवाद है। जो नागर जी के शब्दों में ढलकर एकदम मौलिक रचना का सा आस्वाद देता है। दूसरी कविता 'विकलांगों की सच्ची सेवा' में अपाहिजों का दर्द है और उनकी सेवा का सच्चा मार्ग बताया गया है। इस कविता को लिखे जाने की भी एक कहानी है। एक दिन नागर जी की पोती दीक्षा ने उन्हें घेर लिया और जिद पकड़ी कि उसे अपाहिजों की सेवा पर एक कविता स्कूल में सुनानी है, इसलिए वे उसके लिए कविता लिखें। लिहाजा नागर जी ने यह बाल कविता लिखी, जिसमें उनके शब्दों में मानो अपाहिजों का दर्द, पीड़ा और अपमान बह आया है। लेकिन बाजार की चकाचौंध के बीच एक ओर बैठे अपाहिज को नागर जी झूठी हमदर्दी नहीं देते, बल्कि एक ऐसा रास्ता खोलते हैं, जिसमें उस अपाहिज को काम मिले और उसके आत्म-सम्मान की रक्षा हो।

पापा बोले भीख नहीं,
मैं तुझको दूंगा तेरा काम,
अपना पता बता कर बोले-
आना दफ्तर तुम कल शाम।
तब से भीख मांगना तज कर,
करने लगा भिखारी काम।

'छोटे-छोटे पंख' रेखा राजवंशी की बीस बाल कविताओं का संग्रह है, जिसमें कई कविताएं लीक से हटकर हैं। ऐसी ही एक सुंदर कविता है, 'अजूबे' जिसकी शुरूआत इस तरह है -

धम-धमा-धम ढोलक बाजे,
तक-धिना-धिन तबला,
कई अजूबे मैंने देखे, जब मैं घर से निकला।
मंडी में होती थी खड़-खड़,
मैंने देखा अंदर जाकर।
सभी सब्जियां बोल रही थीं,
गिल्ली डंडा खेल रही थीं।
नमक-मिर्च, हल्दी-धनिया सब लड़ते चिल्ला-चिल्ला,
कई अजूबे मैंने देखे, जब मैं घर से निकला।

संग्रह की 'एक चना', 'जादूगर', 'मेरे कमरे में' जैसी कविताएं भी बच्चों को खूब रिझाएंगी। पर कुछ कविताएं सपाट और उपदेशात्मक भी हैं। कविताओं की लय भी जगह-जगह टूटती है। हालांकि कविताओं के साथ चित्र काफी अच्छे और भावानुकूल हैं।

'आए दिन छुट्टी के' में योगेन्द्र दत्त शर्मा की इक्यावन सुंदर और आकर्षक बाल कविताएं शामिल हैं। संग्रह की ज्यादातर कविताओं में बच्चे का मन मानो बोल रहा है कि वे स्वच्छंद रूप से जो करना चाहें करने दिया जाए, कोई नाहक टोका-टाकी न हो। बच्चे चाहते हैं कि उनके पंख उग आएं, तो वे आसमान में उड़ें। बादलों की तरह खुले आसमान में कुलांचें भरें। एक तरह से योगेन्द्र

दत्त शर्मा की ये सभी कविताएं बच्चों के मन की खुली उड़ान की कविताएं हैं और हर कविता में कुछ न कुछ नया है। कुछ न कुछ उलट-पुलट है। लिहाजा जब मदारी बंदर को नचाना चाहता है, तो बंदर अकड़ जाता है और भूखे पेट काम करने से इन्कार करता है वह पलटकर कहता है -

पर कैसे पहुंचू जालंधर,
रोटी नहीं पेट के अंदर।
भरे पेट का जादू-मंतर,
खा लूं यदि दो-चार चुकंदर ।
बन जाऊंगा मूंछ-मुछंदर
हो जाऊंगा मैं छू-मंतर।

संग्रह की कुछ और मजेदार कविताएं हैं - 'सुनो मजे की बात', 'यह मेरा परिवार', 'गिलहरी', 'आम आए', 'पान वाले', 'हम गप्पी कहलाते', 'ओ नदी', 'यही कहानी', 'हट्टा-कट्टा ', 'हालत है खस्ता', 'नशा हिरन हो गया चाय का', 'गौरैया', 'धूप', 'पहली किरन है', 'आए दिन छुट्टी के', 'मेरी भाभी', 'हवा', 'चंदा मामा' और 'बच्चे' तथा 'धरती मैया'। इनमें 'मेरी भाभी' कविता बड़े मजेदार ढंग से लिखी गई है। यह भाभी आजकल की भाभी है, जो काम से तो दूर भागती है, मगर जब हंसती है तो वह सचमुच अच्छी लगती है। 'हालत है खस्ता' कविता छोटे-छोटे बच्चों के कंधों पर भारी बस्ते लदे होने की पीड़ा का बयान करती है। इसी तरह 'गौरैया', 'गिलहरी' कविताएं बड़ी चंचल कविताएं हैं। संग्रह के अंत में एक सुंदर कविता 'धरती मैया है', जिसे पढ़कर बच्चे महसूस करेंगे कि अच्छा ! धरती हमें कुछ कितना देती है। और मां की गोद की तरह प्यारे अन्न और फलों से हमारा पोषण करती है। संग्रह की ज्यादातर कविताएं ऐसी हैं जिन्हें बच्चे खुद ब खुद गाएं, गुनगुनाएंगे और उनका आनंद लेंगे।

बाल साहित्य में इधर ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें भी बहुतायत में छप रही हैं, जिसका स्वागत किया जाना चाहिए। 'हमारे प्यारे जीव' , 'जंगल के दुलारे जीव' तथा 'जंगल की बातें', वन्य जीवों तथा अन्य पशु-पक्षियों के बारे में रामेश बेदी की तीन रोचक, संस्मरणात्मक पुस्तकें हैं। रामेश बेदी का लगभग सारा जीवन ही जीव-जंतुओं के अध्ययन में बीता है। इनमें से बहुतों को तो वे खुद पकड़ कर घर लाए और उनकी रुचियों-अरुचियों और खाने-पीने की आदतों का गहराई से अध्ययन किया। इन तीन पुस्तकों में उनके उन्ही अनुभवों का सार है, जिन्हें पढ़कर गहराई से महसूस होता है कि जीव-जंतु भी हमसे स्नेह, सहानुभूति और प्यार पाने के हकदार हैं। उनके प्रति क्रूरता नहीं बरती जानी चाहिए। रामेश बेदी सिर्फ खुद ही नहीं, बल्कि उनका पूरा परिवार यानी उनकी पत्नी और तीनों बेटे भी उनके इस वन्य जीवन अध्ययन में सहयोगी रहे हैं। दो बेटे नरेश और राजेश बेदी ने तो वन्य जीवन पर फोटोग्राफी करते हुए कुछ बढ़िया वृत्त चित्र बनाए हैं, जो काफी चर्चित हुए हैं। हमारे प्यारे जीव पुस्तक में रामेश बेदी ने ऐसे जीवों के बारे में संस्मरण लिखे हैं, जो उन्हें फोटोग्राफी करते हुए या वन भ्रमण के दौरान मिले। पुस्तक में 'रोजी' नामक शेर के बच्चे 'नेवला रानी', 'गिरगिटा', 'राम जी का घोड़ा' यानी हरा टिड्डा, भूटान से लाए गए कुत्ते के बच्चे 'अप्पू', 'अजगर', 'वीणा' नाम के कस्तूरी हिरण सफेद शेरों के बच्चे, सफेद चूहे तथा बंदरिया के द्वारा बिल्ली का बच्चा पालने से जुड़े कई ऐसे अद्वितीय संस्मरण हैं, जिन्हें पढ़ते-पढ़ते आप भी रामेश बेदी के साथ हो लेते हैं। चुपके-चुपके इन वन्य जीवों की गतिविधियां, लाड़-प्यार और अनोखी अदाएं देखने में मशगूल हो जाते हैं।

रामेश बेदी की दूसरी पुस्तक 'जंगल के दुलारे जीव' में इन्हीं जीव-जंतुओं के बारे मे थोड़े और विस्तार से बताया गया है। साथ ही कुछ और जीव-जंतुओं जैसे 'ब्रह्मवादिनी मैना', 'रट्टू तोते', 'पंडा', आदि के बारे में बड़ी मजेदार जानकारियां दी गई हैं। रामेश बेदी की तीसरी पुस्तक 'जंगल की बातें' को पढ़ना भी अपने आप में एक रोमांचक अनुभव है। इसमें बहुत कम शब्दों में वन्य जीवों की कुछ अद्‌भुत बातें बड़ी सलीके से कही गई हैं। जैसे कोई बड़ा शेर जब कोई शिकार मारकर लाता है, तो खुद घर के बड़े पुरुष की भांति अलग बैठ जाता है। पहले सबको खाने देता है, बाद में जो बच जाता है उसे ही खुद खाता है। इसी तरह वन्य जीवों में प्रेम और वात्सल्य की भावना कितनी प्रबल होती है, यह 'तेंदुए ने इन्सान के बच्चे को पाल लिया' संस्मरण पढ़कर बखूबी जाना जा सकता है। हुआ यह कि तेंदुए के दो नवजात बच्चों को गांव वालों ने घात लगाकर मार दिया। तब वह तेंदुआ मां, खेत में काम करती एक औरत के दुधमुंहे बच्चे को उठा ले गई और जंगल में गुम हो गई। सारा गांव उस बच्चे को खोजता रहा, पर वह नहीं मिला। अंतत: तीन साल बाद वह उसी तेंदुए के दो अन्य बच्चों के साथ बिल्कुल उन्हीं की तरह चलते-फिरते देखा गया। फिर उसका पिता गांव वालों की मदद से उसे घर लाया और उसे एक इन्सान के बच्चे की तरह पालने की कोशिशें शुरू हुई। ऐसा ही एक अन्य प्रसंग पुस्तक में है, जिसमें एक लकड़बग्घे ने एक पिल्ले को पाल लिया था। धामन सांप और चील की रोमांचक लड़ाई, शेर और जंगली सूअर का थरथरा देने वाला युद्ध, बहादुर भैंसे का शेर और जंगली सूअर का थरथरा देने वाला युद्ध, बहादुर भैंसे का शेर से मुकाबला, एक मोर के कारण हाथियों के क्रोध से बचाव होना, जंगली रीछ की फोटो लेना तथा कैमरे से अजगर की शूटिंग जैसे संस्मरणों में भय

से रोंगटे खड़े कर देने वाले दृश्य हैं। पर लेखक है कि फिर-फिर अपनी जान जोखिम में डालता है और अपने साथ-साथ हमें भी उस जोखिम के सम्मोहन में बरबस खींच लिए जाता है ? सचमुच बेहद दिलचस्प है रामेश बेदी की ये तीनों किताबें। इन्हें पढ़कर लेखक की अन्य किताबें भी ढूंढ़-ढूंढ़कर पढ़ने का मन होता है।

डॉ. रामस्वरूप वशिष्ठ की छोटी-छोटी तीन पुस्तकें 'ब्रह्मांड़', 'शनि' और 'ऐसी है हमारी पृथ्वी' सौरमंडल और पृथ्वी के बारे में जानकारी देती है। पर इन पुस्तकों में रोचकता का अभाव है। हां शनि ग्रह के बारे में जानकारी थोड़े अच्छे ढंग से दी गई है। खासकर पुस्तक इस अंधविश्वास को ध्वस्त करती है कि शनि बड़ा क्रोधी देवता है। लेखक ने बताया है कि शनि बहुत ही सुंदर ग्रह है और उसके वलयों की खूबसूरती का तो कहना ही क्या। पृथ्वी के बारे में भी ठीक-ठाक जानकारी है कि पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन है, विविध प्रकार के जीव जंतु हैं। पृथ्वी पर तीन चौथाई जल है और ऋतुओं की विविध रंगी छटाएं हैं। काश, ये पुस्तकें थोड़े दिलचस्प ढंग से लिखी जातीं तो बच्चों को अधिक भातीं।

सुदर्शन कुमार की 'भूकंप के झटके' भूकंप के बारे में जानकारी देने वाली पुस्तक है, जो बड़े सुन्दर ढंग से छपी है। पुस्तक में भूकंप कैसे आते हैं और क्यों आते हैं, इस बारे में काफी जानकारी है, पर जो ढंग अपनाया गया है, वह लुभावना नहीं है। एक तो यही गड़बड़ है कि स्कूल में पढ़ने वाले छोट-छोटे बच्चों द्वारा इतने बड़े-बड़े व्याख्यान दिलवाए गए हैं। यह स्वभाविक नहीं लगता। अगर यही सारी बातें अध्यापक द्वारा बातचीत की शैली में बताई जातीं तो ज्यादा ठीक रहता । दूसरे, भूकंप के बाद दुखी और त्रस्त लोगों को जो विभीषिकाएं झेलनी पड़ती हैं, उस पर विचार नहीं किया गया है। अगर पुस्तक में इस पर भी एक अध्याय होता, तो वह कहीं अधिक उपयोगी होती। फिर लेखक सुदर्शन कुमार का ढंग ऐसा नहीं है जो बच्चों को आकर्षित करे। कोरी जानकारी देने से तो बात नहीं बनती।

'विज्ञान के 150 तथ्य जिन पर आप यकीन नहीं करेंगे', 'विज्ञान के आश्चर्य', 'विज्ञान के अचरज' और 'झटपट विज्ञान' बच्चों को खेल-खेल में विज्ञान सिखाने वाली अद्भुत किताबें हैं। इनमें हरमन और नीना श्नाइडेर द्वारा लिखित 'झटपट विज्ञान' में विज्ञान के ऐसे रोचक प्रयोग दिए गए हैं जिन्हें बच्चे खेल-खेल में एक-दो मिनट में कर सकते हैं। इन प्रयोगों के लिए जरूरी चीजें भी घर में ही असानी से उपलब्ध हो जाएंगी। लिहाजा छोटे बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि जगाने के लिहाज से यह किताब खासी उपयोगी है। सैंड्रा मार्केल द्वारा लिखी गई 'विज्ञान के अचरज' पुस्तक में भी आसानी से किए जा सकने वाले विज्ञान के प्रयोग हैं। बीच-बीच में वैज्ञानिकों की संक्षिप्त जीवनियां भी हैं। जिसमें उनके अनुपम आविष्कारों के बारे में बताया गया है। मजे की बात यह है कि ये वैज्ञानिक खोज तो कुछ और कर रहे थे, लेकिन संयोगवश वे किसी और ही चीज का आविष्कार कर बैठे। अनायास हो गई इन खोजों के बारे में जानकारी मजेदार है।

मेल्बिन बर्जर द्वारा लिखी 'विज्ञान के आश्चर्य' पुस्तक सचमुच चकित कर देने वाली है। इसे पढ़ते हुए बच्चे बार-बार यही सोचेंगे - अच्छा ! ऐसा भी हो सकता है। 'विज्ञान के 150 तथ्य जिन पर आप यकीन नहीं करेंगे' में बहुत थोड़े शब्दों में विज्ञान के ऐसे अनूठे तथ्यों को पिरोया गया है कि पढ़कर बच्चे ही नहीं, बड़े भी हैरान होंगे। स्कॉलास्टिक इंडिया द्वारा छपी इन चारों पुस्तकों का अनुवाद अरविंद गुप्ता ने बड़ी सहज-सरल भाषा में किया है। किताबें छपी भी सुंदर हैं, लेकिन महंगी हैं। बच्चों की किताबों की कीमतें कम हों, तभी वे ज्यादा बच्चों तक पहुंच पाती हैं।

चित्रा गर्ग द्वारा लिखित 'विश्व की महान वैज्ञानिक महिलाएं' ऐसी महिला वैज्ञानिकों की जीवन कथाएं हैं, जिन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में इतनी उन्नति की तथा इतना गहन शोध किया कि इन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इन प्रतिभाशाली वैज्ञानिक महिलाओं में सर्वोपरि है - मेरी क्यूरी, जिन्हें सन् 1903 में भौतिक में नोबेल पुरस्कार मिला और 1913 में दुबारा रसायन शास्त्र में अनुसंधान के लिए यही पुरस्कार मिला। वे विश्व में एकमात्र महिला वैज्ञानिक थीं, जिन्हें दो बार नोबेल पुरस्कार मिला। इसके अलावा अन्य महिला वैज्ञानिकों में गर्टी थेरेसा कोरी को औषधि विज्ञान में शोध के लिए पुरस्कार मिला। मेरी क्यूरी की बेटी आयरीन ज्यूलियट क्यूरी को भी रसायन में ही नोबेल पुरस्कार मिला। बारबरा मैकाक्लिटॉक को शरीर विज्ञान एवं औषधि विज्ञान में खोज के लिए पुरस्कार मिला। चित्रा गर्ग ने इन सभी महिला वैज्ञानिकों की संघर्ष पूर्ण जीवनियों को सलीके से लिखा है।

'बस्ता बोला' प्रमोद जोशी की जानकारी से भरपूर लेकिन साथ ही मनोरंजक पुस्तक है। पुस्तक में प्रमोद जोशी ने स्कूल जाने वाले दो बच्चों को कहानी के माध्यम से बस्ते और उसमें रखी जाने वाली चीजों का वर्णन किया है। इनमें हैं - रेशे की कहानी, जिससे कपड़ा बनता है। कागज की कहानी है, जिससे किताबें- कापियां बनती हैं। इसी तरह पैन, रबड़, स्याही और किताब छपने की भी कहानी सुनाई गई है। बच्चे रोज इन चीजों को अपने बस्ते में रखकर ले जाते हैं। पर कभी न कभी तो उनके मन में आता ही होगा कि

सबसे पहले की किताब कैसे छपी होगी ? पेंसिल को किसने बनाया होगा ? या पैन की खोज किसने की, बॉलपैन कैसे बना ? इन सबमें सबसे रोचक पेंसिल की खोज की कहानी है। प्रमोद जोशी बताते हैं कि एक बार सन 1564 में इंग्लैंड में बड़ा भारी तूफान आया। बोरोडेल नामक स्थान पर एक बड़ा भारी पेड़ था, जो आंधी-तूफान में जड़ से उखड़ गया। लोगों ने देखा कि पेड़ तो उखड़ा ही है, उस जमीन से काले रंग का एक पदार्थ भी निकला है। लोगों ने इसे घिसकर देखा कि यह काला निशान छोड़ता है और पानी में घुलता नहीं है। बस, यही काला पदार्थ 'ग्रेफाइट' था, जो बाद में पेंसिल के सिक्के के रूप में काम आया। इसी तरह फाउंटेन पेन और बॉल पैन की कहानी भी बड़ी रोचक है। हां, जिन लोगों ने इन पदार्थों की खोज की, इनका अपना जीवन कैसा था या उन्होंने कैसे-कैसे प्रयोग किए, कैसी कठिनाइयां झेलीं, इसका वर्णन पुस्तक में न के बराबर है। अगर थोड़ा इस बारे में भी बताया जाता; तो ये कहानियां बच्चों को कहीं अधिक रोमांचक लगतीं। तो भी लेखक ने बच्चों को जानकारी देने का जो ढंग अपनाया है, उसकी तारीफ करनी होगी।

मनमोहन सरल की 'रोमांचक साहसिक यात्राएं' किशोर पाठकों के लिए अद्‌भुत किताब है। मजा यह कि न सिर्फ किशोर, बल्कि बड़े भी अगर इसे पढ़ना शुरू करें तो किताब पूरी किए बिना छोड़ना मुश्किल है। ऐसी यात्राएं ! सचमुच आदमी में कितना जीवट है। शायद इसीलिए मनुष्य को प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहा गया है। जिस चीज की ठान ले, उसके लिए वह मर मिटने के लिए तैयार हो जाता है। बस, जानने की देर है - फिर तो चाहे आंधी आए, बर्फीले तूफान हों, ऊंचे पर्वत शिखरों को चूमना हो, पृथ्वी पर एकदम अनजान अजीब द्वीपों की खोज हो उसके पैर रुकते नहीं। जो साहसी और धुनी आदमी ने ठान लिया, वह ठान लिया। फिर रास्ते की मुसीबतों की क्या परवाह ! उसे तो चलते ही जाना है। भले ही भोजन सामग्री खत्म हो जाए और लकड़ी का बुरादा खाकर ही जीना पड़े, पर यात्रा नहीं रुकनी चाहिए। जिस धरती के टुकड़े तक पहुंचना है, वहां पहुंचना ही है। उत्तरी या दक्षिणी ध्रुव की बर्फीली आंधियों में हाथ-पैर भले ही गल जाएं, पर जब तक सांस है, तब तक चरैबेति-चरैबेति। सचमुच आदमी के विकट जीवट का बयान करती ये रोमांचक साहसिक यात्राएं निश्चय ही हजारों-हजार पाठकों द्वारा पढ़े जाने योग्य हैं। उन्हें पढ़ते हुए यह बात बार-बार याद आती है, जो आइंस्टीन ने गांधी जी के बारे में कही थी कि आगे आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से विश्वास करेंगी कि गांधी जैसा हाड़-मांस का आदमी कभी हमारे बीच हुआ था। इसी तरह इन साहसी यात्रियों के कारनामे पढ़कर भी मुंह से अनायास निकल पड़ता है - क्या सचमुच ये हमारे जैसे ही हाड़-मांस के आदमी थे या किसी और ग्रह से उतरे हुए प्राणी थे ? इनके जीवट का क्या कहना ! मनमोहन सरल की यह पुस्तक पढ़कर ही इसे अच्छी तरह जाना जा सकता है।

सचमुच साहस की ऐसी रोमांचक पुस्तक का हिंदी बाल साहित्य में अभाव है, जिसे कुछ हद तक, यह पुस्तक पूरा करती है। मनमोहन सरल ने यह पुस्तक लिखकर सचमुच प्रशंसनीय काम किया है। इस पु स्तक में ऐसी नौ यात्राओं का वर्णन है, जिनमें चीनी यात्री ह्वेनसांग की भारत यात्रा, वेनिस के मार्को पोलो की चीन तथा एशिया के कुछ भागों की यात्रा, कोलम्बस की नई दुनिया की खोज और वास्कोडिगामा की भारत यात्रा शामिल हैं। मेजीलन में अपनी यात्रा यह सिद्ध करने के लिए की थी कि पृथ्वी गोल है। वह इसे पूरा नहीं कर पाया तो उसके बाद सर फ्रांसिस ट्रेक ने उसके अधूरे काम को पूरा किया। इन दोनों का नाम विकट समुद्री डाकुओं के रूप में भी जाना जाता है। इसके अलावा डेविड लिविंग स्टोन की अफ्रीका की खोज यात्रा नान्सन की उत्तरी ध्रुव की खोज यात्रा जो अधूरी रही और जिसे बाद में पेरी ने पूरा किया। पीटर स्कॉट द्वारा की नई दक्षिण ध्रुव की यात्रा भी रोमांचक है। हालांकि एमण्डसन; पीटर स्कॉट से एक महीना पहले ही दक्षिणी ध्रुव पहुंच गया था, पर इससे पीटर स्कॉट की यात्रा के महत्त्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। पुस्तक के अंत में तेनसिंह नोरंगे और हिलेरी की साहसिक और रोमांचक यात्रा एवरेस्ट विजय का बड़े भावपूर्ण ढंग से वर्णन किया गया है। इसे पढ़ते हुए लगता है, मनमोहन सरल का कवि मन जाग उठा है। पुस्तक सहज-सरल भाषा में लिखी गई है तथा बड़े आकर्षक ढंग से छपी है। बच्चों को यह खूब पसंद आएगी।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि पिछले पांच-सात सालों में जो बाल साहित्य सामने आया है, वह काफी उम्मीद जगाने वाला है। बाल कविता, बाल कहानियां, मजेदार गप्पें, और सबसे बढ़कर ज्ञान-विज्ञान को लेकर जो पुस्तकें छपी हैं, वे बच्चों को अच्छे संस्कार देने, उनकी बुद्धि का विकास करने और उन्हें और अधिक संवेदनशील बनाने में अपनी-अपनी भूमिका निभाएंगी, यह उम्मीद की जा सकती है। बच्चों का मन बहुत कोमल होता है। उन्हें कोई मां की तरह स्नेह से समझाए, बताए तो बच्चे उसे बड़ी सरलता से ग्रहण कर लेते हैं। ये पुस्तकें यही काम कर रही हैं और हमें आश्वस्त करती हैं कि बच्चों के भविष्य निर्माण में उनकी सार्थक भूमिका है। ◆